संपादक के नोट

मेरे सारे पाठकों को ईस्टर की शुभकामनाएं और मैं आप सबका अभिवादन हमारे प्रभु और उद्धारकरता येशु मसीह के नाम से करती हूँ।

परमेश्वर का पुत्र प्रकट हुआ ताकि वह शैतान के कार्यों को नाष कर सके। हृदय के व्याकूल होने के कारण बहुत–से होतें हैं। हमारे बीते हुए पाप के जीवनों में, पाप, बीमारी और मृत्यु का भय हमे बहुत सता सकता है। हमारे हृदयों का व्याकूल होने में शैतान का कार्य, अहम कारण हो सकता है।

कभी–कभी शैतान मनुष्य पर सीधे वार करता है। कभी–कभी वह हम पर चालाकी से बुरे लोगों की ओर से वार करता है। वह हमारे परिवार के लोगों को हमारा शत्रु बना सकता है। इसी कारण येशु ने कहा मनुष्य का शत्रु उसके खुद के घर के लोग होते हैं।

परमेश्वर के बच्चों, तम्हे ड़रने की ज़रूरत नहीं और न कि शैतान से परेशान होने की, क्योंके हमारा प्रभु हमारे तरफ़ है। येशु तम्हारे साथ है।

येशु मसीह ने शैतान को कलवरी के क्रूस पर उसका सर कुछलकर हरा दिया। येशु ने तुम्हें शैतान पर अधिकार दिया है।

१ पतरस ५:९ कहता है – विश्वास में दृढ़ रहकर उसका विरोध करो, और यह जान लो कि तुम्हारे भाई जो संसार में हैं इसी प्रकार की यातना सह रहे हैं।

इसलिए, अपने–आप को परमेश्वर को सौंप दो। शैतान का सामना करो और वह तुम से भाग जाएगा। जो तुम में है वह उससे बड़ा है जो इस संसार में है। वह तुम्हारा दाहिना हाथ पकड़कर कहता है, भय–बीत न हो। प्रेरित पौलुस कहता है गलतियों ५:१० में – मुझे प्रभु में तुम पर भरोसा है कि तुम किसी अन्य विचारधारा को नहीं अपनाओगे, परन्तु तुम्हें घ ाबरा देने वाला, चाहे वह कोई क्यों न हो, दण्ड भोगेगा।

वह इफिसियों ६:११ में विश्वासुओं के लिए लिखता है – परमेश्वर के सम्पूर्ण अस्त्र–शस्त्र धारण करो जिस से तुम शैतान की युक्तियों का दृढ़तापूर्वक सामना कर सको।

शानति का परमेश्वर शीघ्र शैतान को तुम्हारे पैरों तले कुचलवा देगा। हमारे प्रभु येशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारे साथ हो।

अगर हमारे प्रभु को हमारे लिए लड़ाइयाँ लड़ना हैं तो हमारे विवेक को प्रभु में बराबर होना चाहिए। लड़ाई प्रभु का है, हार शैतान का है और जीत हमारा है।

भजन सहिंता ९१:१३ कहता है – तू सिंह और नाग को कुचलेगा, जवान सिंह और अजगर को तू रौंदेगा।

यूहन्ना ८:२९ में येशु का गवाह क्या है? – जिसने मुझे भेजा वह मेरे साथ है। उसने मुझे अकेला नहीं छोड़ा है, क्योंकि मैं सदा वे ही कार्य करता हूँ जिस से वह प्रसन्न होता है।

अकेलापन दुख के लिए जगह देता है जिस पर शैतान वार करता है। भय ने प्रेरितों को तक नहीं छोड़ा। जब येशु को क्रूस पर चढ़ाया गया, प्रेरितों को यहुदियों का ड़र था, वें दरवाज़ों को बंद करके अंदर बैठे थे।

उस समय येशु ने बंद कमरे में प्रवेश किया और कहा "तुम्हारे संग शांति बनी रहे।" उसी क्षण प्रेरितों का सारा भय निकल गया।

यूहन्ना २०:१९ कहता है – उसी दिन, जो सप्ताह का पहिला दिन था, संध्या के समय जब वहां के द्वार जहां चेले थे, यहूदियों के डर के मारे बन्द थे, तब येशु आकर उनके मध्य खड़ा हो गया और उसने उनसे कहा, "तुम्हें शानति मिले।"

जब याकूब अकेले सफ़र कर रहा था उसका हृदय व्याकूल था। उसके भय को निकालने के लिए प्रभु ने उसके दूतों को भेजा। उत्पत्ति ३२:१-२ - याकूब अपने मार्ग पर आगे बढ़ा और परमेश्वर के दूत उस से मिले। और याकूब ने उन्हें देखकर कहा, यह तो परमेश्वर का दल है। अतः उसने उस स्थान का नाम महानैम रखा।

तुम्हारी परिक्षाएं और संकटों के समय प्रभु तुम्हे शांति देता है, इसी कारण येशु पृथ्वी पर आया। लूका ४:१८ – "प्रभु का आत्मा मुझ पर है, क्योंकि उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है। उसने मुझे भेजा है कि मैं बनदियों को छुटकारे का और अन्धों को दृष्टि पाने का सन्देश दूं और दलितों को छुड़ाऊं।

यशायाह ६१:१ – प्रभु यहोवा का आत्मा मुझ पर है, क्योंकि यहोवा ने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिए भेजा है कि खेदित मन के लोगों को शानति दूं, कि बनदियों के लिए स्वतन्त्रता का और क़ैदियों के लिए छुटकारे का प्रचार करूं।

जब तुम अकेलापन महसूस करते हो और तुम्हारा हृदय व्याकूल है तब कलवरी के क्रूस की ओर देखो और यशु को पुकारो, वह हर परिस्थिति को बदल देगा और तुम्हे दिव्य शांति देगा।

भजन संहिता ४६:१० कहता है – "शान्त हो जाओ, और जान लो कि मैं ही परमेश्वर हूँ : जातियों के मध्य मैं ही महान ठहरूंगा।

मार्था बहुत–से वस्तुओं से व्याकूल थी। येशु ने उसकी ओर देखा और कहा लूका १०:४१ कहता है – परन्तु प्रभु ने उत्तर दिया, मार्था, हे मार्था, तू बहुत–सी बातों के लिए चिनतित तथा व्याकुल रहती है; उसने कहा कि मरियम ने अच्छा भाग चुना है, वह है येशु मसिह। वह है उद्धारकरता और अनंत जीवन।

प्रभु ने तुम्हारी सारी परिक्षाओं और संकटों के बारे में उस पर्वत में की प्रचार में कहा है।

मत्ती ६:२५ कहता है – इस कारण मैं तुमसे कहता हूं कि अपने प्राण के लिए यह चिन्ता न करना कि हम क्या खाएंगे या क्या पीएंगे; और न ही अपनी देह के लिए कि क्या पहिनेंगे। क्या प्राण भोजन से या देहवस्त्र से बढ़कर नहीं?

मत्ती ६:२७ –तुम में से कौन है जो चिन्ता करके अपनी आयु एक घड़ी भी बड़ा सकता है?

मत्ती ६:३१ – इसलिए यह कह कर चिन्ता न करो, "हम क्या खाएंगे? अथवा क्या पीएंगे?" या, हम क्या पहिनेंगे?"

मत्ती ६:३४ – इसलिए कल की चिन्ता न करो, क्योंकि कल का दिन अपनी चिन्ता आप कर लेगा। आज के लिए आज ही का दुख बहुत है।

इस लिए मेरे प्रिय बच्चों, तुम्हारी सारी परिक्षाएं और दुखों को प्रभु के चरणों में रखो। भजन संहिता ५५:२२ – अपना बोझ यहोवा पर डाल दे और वही तुझे सम्भालेगा, वह धर्मी को कभी टलने न देगा।

और हम जानते हैं कि सारी चीज़े उनके अच्छे के लिए होता है जिनसे प्रभु प्यार करता है, उनके लिए जिन्हे उसके कार्य के लिए बुलाए गए हैं। उसने अपने ही पुत्र को नहीं छोड़ा लेकिन हम सब के लिए त्याग दिया, क्या वह हमारे भी साथ नहीं रहेगा और हम सबको हर वस्तु बिना रुकावट के नहीं देगा?

इसलिए हम निर्भय होकर आगे बढ़ेंगे यह जानते हुए कि हमारा प्रभु येशु मसिह हमारे साथ है, सारे परिस्थितियों में।
हमारे शांति का परमेश्वर तुम्हारे संग रहे तब तक कि हम फिर मिलेंगे।

– पास्टर सरोजा म.

प्रभु में विजय

२ कुरिन्थियों २:१४ – परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो जो मसीह के द्वारा विजयोत्सव के जुलूस में हमारी अगुवाई करता है, और हमारे द्वारा अपने ज्ञान की मधुर सुगन्ध हर जगह फैलाता है। हमारा परमेश्वर चाहता है कि हम उन हर चीज़ो में विजय प्राप्त करें, जो हम करते हैं, परमेश्वर हमारे लिए एक जीत और विजय का जीवन चाहता है। परमेश्वर हमे एक जयवंत जीवन जीने के लिए अनुग्रह देता है। वह नहीं चाहता कि हम दुख़ दर्द में रहे और अपने कार्यों में हार जाए। लेकिन हर चीज़ में परमेश्वर चाहता है कि हम विजई बनें। **रोमियों ८:३७ – परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिसने हम से प्रेम किया जयवन्त से भी बढ़कर हैं।** हम कई बार आतमिक रीति से हार जाते है, शारिरिक रीति से हम हर चीज़ में उन्नति पाते होंगे, लेकिन आतमिक रीति से हम हार जाते हैं। कई बार रूकावटें हमारे परिवारों, समाज, धर्म, प्रेम के द्वारा आती हैं, अलग–अलग तरीकों से हम आतमिक रीति से हार जाते हैं। इसलिए अगर हम परमेश्वर पर ध्यान लगाए रखे तो हम आतमिक रीति से भी विजई होगें। हमे अपना मन परमेश्वर पर रखना हैं, केवल तब हम आतमिक रीति से विजई होगें। येशु ने कहा **प्रकाशितवाक्य ३:२१ – जो जय पाए उसे मैं अपने साथ अपने सिंहासन पर बैठने दूंगा, जैसे मैं भी जय पाकर पिता के साथ उसके सिंहासन पर** बैठा हूं। अगर हम येशु मसीह के जीवन को देखेंगे, उसने आतमिक और शारिरिक रीति से बहुत–से संघर्षों का सामना किया, लोगों ने अलग–अलग तरिकों के रूकावटों को उसके जीवन में लाया, उसने हर दिन हकीकत में युद्धों का सामना किया और उसपर प्रबल हुआ विजई होकर एक या दो दिन नहीं लेकिन उसके हर युद्ध में येशु विजई था। हमारे जीवनों में भी, हम दुष्ट के लड़ाई का सामना हर एक दिन करते हैं। सृष्टि की रचना से मानव जाति ने उनके जीवनों में युद्धों का सामना किया। स्वर्गीय राज्य पहुँचने के लिए हमे परमेश्वर पर हर दिन ध्यान रखना ज़रूरी हैं। क्योंकि हमारा परमेश्वर एक परमेश्वर है वह उसके जीवन के हर परिस्थिति में विजई था। हम देखते हैं **ईब्रानियों ४:१५ – क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं जो हमारी निर्बलताओं में हमे सहानुभूति न रख सके। वह तो सब बातों में हमारे ही समान परखा गया, फिर भी निष्पाप निकला।** हमारा याजक एक महायाजक है जो इस संसार की हर लड़ाई पर जयवंत हुआ है, इसलिए हमारा महायाजक हर परिस्थिति में हमारा सहायक है। हमारा महायाजक जो इस संसार में एक बढ़ई के बेटे के समान आया, मरियम द्वारा पैदा हुआ, इस दुष्ट संसार में जिया और हर युद्ध को जीता। इस लिए, परमेश्वर कहता है, आतमिक युद्धों को जीतने के लिए, हमे केवल उसपर ध्यान करना चाहिए। हमारे विचार और नज़रें भटक जाती हैं जब हम हमारे परिवार, हमारे अड़ोस–पड़ोस, हमारे समाज की ओर ज़्यादा ध्यान देते हैं, इस प्रकार, परमेश्वर पर से नज़रे हट जाती हैं और हम हमारे आतमिक युद्ध में हार जाते

हैं। लेकिन हमारा महायाजक कहता है हमसे "मेरे भी माता–पिता थे, परिवार था, धर्म था, रूकावटें थी लेकिन मैंने मेरे हर युद्ध को मेरे स्वर्गीय पिता–परमेश्वर पर ध्यान लगाकर विजय प्राप्त किया। इसलिए जब हम येशु मसीह पर ध्यान रखते हैं, हम आतमिक रीति से विजई हो जाएंगे। हम में से बहुत से लोग वास्तविक रीति से बसे हुए हैं – हमारे परिवार बसे हुए हैं, वह युद्ध हमने लड़ भी ली और जयवंत हुए, विजय पाए। लेकिन आतमिक विजय प्राप्त करने के लिए, हमे इस संसार पर जयवंत होकर स्वर्गीय राज्य पहुँचना हैं। हम शायद सारे उपवास प्रार्थना, कलिसिया कि सारे प्रचार सेवा, गृह प्रचार सेवाओं में जाते होंगे और फिर भी वचन को भीतर प्राप्त नहीं करते कि हमारे जीवनों को बदले और आतमिक विजय प्राप्त कर सके, फिर जो कुछ हम करते हैं हमारे जीवन में वह व्यर्थ है अगर हम वचन के अनुसार नहीं जीते हैं। इसलिए हमारा महायाजक हमसे कहता है कि इस संसार पर जीत ले, हमारे परिवार पर प्यार, दोस्त, समाज, पर जीतले, हमे केवल उसपर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। जब हम देखते हैं कि येशु ने कैसे शारिरिक चुनौतियों को झेला उसके जीवन में और आतमिक रीति से वह जयवंत हुआ, हमे यह समझना ज़रूरी है कि यह भी संभव है कि हम भी आतमिक रीति से जयवंत हो सकते हैं जब हम अपने ध्यान को हमारे महायाजक पर लगाते हैं। इस संसार पर जीतने के लिए हमारी आँखे केवल येशु मसीह पर लगे रहना चाहिए। हमारा दौड़ इस संसार में व्यर्थ है अगर हम सब कुछ जीतते हैं और हमारी आतमिक लड़ाई हारते हैं।

हम अब देखते हैं, येशु कैसे भिन्न–भिन्न लड़ाइयों को जीवन में जीतता है। एक बार जब येशु ५००० लोगों को वचन सुना रहा था, तीन दिन और रात लगातार, लोग उत्साह से बैठकर वचन सुनने लगे। अब समय आया उनके जाने का, लेकिन येशु नहीं चाहता था कि वें भूखें लौटे। यह एक चुनौती था, लेकिन येशु इस चुनौती से न ड़रा। उसने लोगों को आतमिक रीति से "वचन" खिलाया था, लेकिन वह उन्हे शारिरिक रीति से खिलाना चाहता है क्योंकि वें भूखे थे। चेलों ने येशु से कहा कि खाना केवल ५ रोटी और २ मछलियाँ थीं। हम देखते हैं **मरकुस ६:३४–४४ – और नाव से उतरकर उसने विशाल जनसमूह को देखा और उन पर उसे तरस आया क्योंकि वे ऐसी भेड़ों के समान थे जिनका कोई रखवाला न हो; और वह उन्हें बहुत–सी बातें सिखाने लगा। जब दिन बहुत ढल गया तो उसके चेले उसके पास आए और कहने लगे, यह स्थान सुनसान है और दिन बहुत ढल चुका है; उन्हें जाने दे कि वे आसपास की बस्तियों और गांवों में जाकर अपने लिए कुछ खाने को मोल ले सकें।" परन्तु उसने उत्तर देते हुए कहा, तुम ही उन्हें कुछ खाने को दो!" उन्होंने उस से कहा, क्या हम जाकर दो सौ दीनार की रोटियां मोल लाएं और उन्हें खाने को दें? उसने उनसे कहा, तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं? जाकर देखो। उन्होंने मालूम कर के कहा, पांच – और दो मछलियां। और उसने सब को आज्ञा दी कि भोजन करने पंक्तियों में हरी घास पर बैठ जाएं। और लोग पचास–पचास और सौ–सौ की**

पंक्तियों में बैठ गए। उसने पांच रोटियों और दो मछलियों को लिया और स्वर्ग की ओर देखते हुए भोजन पर आशिष मांगी और रोटियां तोड़ी और उन्हें चेलों को देता गया कि वे उनमें बांटें। और उसने दो मछलियों को भी उन सब में बांट दिया। और उन सब ने खाया और तृप्त हुए। उन्होंने रोटी के टुकड़ो और मछलियों से भरी हुई बारह टोकरियां उठाई। और रोटी खाने वाले पुरूषों की संख्या पांच हज़ार थी। शारिरिक रीति से यह संभव नहीं कि ५ लोगों को ५ रोटी और २ मछलियाँ खिलाया जा सके, लेकिन आतमिक बुद्धि से येशु ने चेलों से कहा कि वें लोगों को सौ और पचास की संख्या में बिठाए। उसने फिर रोटी और मछलियों की टोकरी को स्वर्ग की ओर उठाकर उसके स्वर्गीय पिता से प्रार्थना की और खाना को आशिषित किया और चेलों को खाना बाँटने के लिए कहा। चेलों ने लोगों को खाना बाँटना शुरू किया, इस प्रकार खाने की कमी नहीं हुई लेकिन वह टोकरी उमड़ता ही उमड़ता गया। पाँच हज़ार को खिलाने के बाद, बारह टोकरियाँ फिर भी बची थी। यह येशु की उन जयवंत आतमिक लड़ाइयों में एक है जो उसने जयवंत होकर जीता। मुझे अब भी याद आता है एक दिन हम शहर से बाहर दूर हमारी गाड़ी में जा रहे थे। गाड़ी की डेशबॉर्ड में संकेत हो रहा था कि पेट्रोल की टँकी खत्म हो गई है, लाल बत्ती जल गई जिसका अर्थ है कि अब पेट्रोल भरना अत्यंत आवश्यक था। गाड़ी चलाने वाले ने साफ़–साफ़ कह दिया कि "गाड़ी अब बंद पड़ जाएगी। हम पेट्रोल–पंप ढूँड़ने लगे, अब दो घंटे बीत चुके और हम उस स्थान पर पहुँचे, लेकिन पेट्रोल अब भी था। मैंने प्रभु से प्रार्थना किया "या तो हमे ? पेट्रोल–पंप मिले या तो यह गाड़ी न बंद पड़े। यह हमारी आतमिक आशीष और विजय था। कल्पना करो, यदि गाड़ी बंद पड़ जाता तो क्या हुआ होता, दूर–दूर तक विराना था और नज़र में कुछ भी नहीं आ रहा था – पेट्रोल–पंप भी नहीं। लेकिन परमेश्वर हमारे साथ था और उसने इस चमत्कार को हमारे जीवन में उस दिन किया। इस प्रकार यह हमारी आतमिक विजय था। इसी प्रकार क्या ५००० लोगों को ५ रोटी और २ मछलियाँ कोई कलपना कर सकता है? यह पूर्ण रीति से आतमिक विजय था। इसी प्रकार, परमेश्वर चाहता है कि हम में से हर एक को आतमिक विजय प्राप्त हो। एक बार हम फिर पढ़ते हैं **कुरिन्थियों २:१४ – परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो जो मसीह के द्वारा विजयोत्सव के जुलूस में हमारी अगुवाई करता है, और हमारे द्वारा अपने ज्ञान की मधुर सुगन्ध हर जगह फैलाता है।** अगर हम ने कभी ऐसी स्थितियों का सामना हमारे जीवन में किया है, हमे स्मरण करना है परमेश्वर के वचन को कि वह हमे मसीह में जयवंत पाना चाहता है। हम में से कुछ लोग आज भी कठोर हृदयी हैं, यह जानकर भी कि वचन हमारे लिए है, ताड़ना हमारे लिए है, इसके बावजूद हम परमेश्वर की आवाज़ को नज़र अंदाज़ कर देते हैं। दुष्ट हमारे हृदय को कठोर कर देता है कि हम परमेश्वर के वचन को न सुने और हमारे जीवनों में ताड़ना न पाए। इस प्रकार हम आतमिक आशिषों को नहीं पा सकते हैं। उस विधवा की कहानी को याद करें, जिसने, जब उसका पती जीवित था, शारिरिक

रीति से कोई कमी नहीं महसूस की, लेकिन जब उसका पती मर गया उसे कज़ी को चुकाना था और जब कर्ज़दार आए और उसके बच्चों को ले जाने की धमकी दी, वह परमेश्वर के सेवक एलीशा की ओर फ़िरी। एलीशा ने उसे आतमिक रीति से आशिषित किया और तेल के उस चमत्कार को किया और उसके पास उमड़ता हुआ आशीष आया और उसके सारे पात्र तेल से भरे थे, ऐसा एक भी पात्र नहीं था जिसमें तेल नहीं था और उन पात्रों में भी जो पड़ोसियों से माँगे हुए थे।

एक बार येशु नाव में सफ़र कर रहा था, उन्होंने गहरे समुद्र में तूफ़ान का सामना किया। लेकिन येशु उस तूफ़ान से नहीं ड़रा। उस तूफ़ानी समुद्र में उस नाव की हालत की कल्पना करो। येशु अब एक आतमिक चुनौती का सामना कर रहा है। **मरकुस ४:३९–४० – तब जगाए जाने पर उसने आंधी को डांटा और झील से कहा, "शान्त हो, थम जा! और आंधी थम गई और सब कुछ शान्त हो गया। उसने उनसे कहा, तुम इतने डरपोक क्यों हो? यह कैसी बात है कि तुम में विश्वास नहीं?** येशु ने तूफ़ान को शांत कराया और समुद्र ने उसके आज्ञा का पालन किया। यह हमारे महायाजक का आतमिक विजय है। एक और बार, येशु के चेलों का सामना एक प्रश्न से हुआ। क्या उनका स्वामी कर चुकाता है? यह उसके सामने बहुत बड़ा चुनौती था, लेकिन येशु ने इन आतमिक आशिषों को भी जीत लिया। याद रहे, हमारे सहन करने के ताकत से ज़्यादा हमे नहीं परखा जाता हैं। येशु सिर्फ़ उतना ही परखता है जितना कि हम सह सकते हैं। पहिलेजब उनसे चुंगा देने के बारे में प्रश्न किया गया, और पतरस ने उत्तर दिया "हाँ" पतरस के घर में प्रवेश करने से पहले येशु ने यह जान लिया और उसने पतरस से कहा, अब जब तुमने अधिकारियों सें कहा "हाँ", हमे चुंगा भरना हैं। कौन चुंगा भरता है? इस संसार के लोग। अगर येशु कहता कि हमे चुंगा नहीं भरना है तो बहुत–से लोग उसके विरूद्ध आते और कहते कि उनको भी चुंगा भरने की ज़रूरत नहीं हैं। इस प्रकार येशु ने मनुष्यों की चालाकी को पहचाना और वह उन लोगों को उसके विरूद्ध विद्रोह करने के लिए प्रोत्साहित नहीं करना चाहता था, इसलिए येशु पतरस से कहता है, समुद्र में जा और अपने कांटे को ड़ाल, जो पहला मछली तुम्हे मिले, उसके मूँह को खोल और तुम्हे उसमें चांदी का सिक्का मिलेगा। उसे ले जा और तुम्हारे और मेरे चुंगे को भर दे। यह एक आतमिक विजय है।

हमे याद रखना हैं, परमेश्वर हमारा देनहारा है, वह हमारे सारे ज़रूरतों का समय–समय पर पूरा करेगा, हमे किसी भी बात की चिंता नहीं करना चाहिए। हमारे महायजक ने इसी संसार में सारे बाधाँओं को पार करके विजय प्राप्त किया, वह जानता है कि हम में से हर एक की कमी क्या है और हमारी ज़रूरत क्या है। इस प्रकार परमेश्वर हमारे पापों के बारे में भी बात करता है, अगर वें गहरे लाल हैं तो वह कहता है "मैं तुम्हे मेरे अनमोल लहु से धोकर शुद्ध करूँगा। तुम्हारे बोझों को मेरे पास लाओ, मैं तुम्हारे बोझों को ले लूँगा और तुम्हे हलका करूँगा। लेकिन येशु ने हमे उसका अनमोल जीवन दिया है, ताकि हमारा जीवन उसमें ऐश्वर्यवान हो और उसमें भरपूर हो। उसने उसके शारिरिक दुर्बलता पर जीत

लिया इस संसार में और चाहता है कि हम भी उनपर इस संसार में जय प्राप्त करे। लेकिन हम में से कुछ लोग अब भी संसार में रूढ़िवादी हैं, समाज अब भी हमारे जीवन को नियंत्रित करता हैं। हम अब भी संसार और संसार के लोगों से ड़रते हैं। हमारा जीवन भीतर से दुर्गंध बन गया है प्रभु के सामने, हमारा प्रभु ऐसे जीवन से खुश नहीं। हम में से कितने ऐसे झूठे जीवनों को जी रहे हैं? हम सोचते हैं कि परमेश्वर नहीं जानता, वह हम पर नहीं देख रहा है। हमारा परमेश्वर लोगों को प्रसन्न करने के लिए कुछ नहीं करता, वह चाहता है कि हम एक सच्चाई का जीवन जीए। येशु जानता है कि हमारे लिए क्या संभव है और क्या नहीं है, वह भी एक मनुष्य के जैसे इस संसार में जीया। लेकिन हमारा परमेश्वर चाहता है कि हम आतमिक विजय प्राप्त करें, लेकिन अगर हम केवल शारिरिक रीति से कोशिश करेंगे तो यह कभी संभव नहीं कि हम आतमिक आशिषों के बिना ऐसा विजय प्राप्त करे।

नबी एलीशा ने नबी एलिय्याह का पीछा किया तब तक कि जब तक अग्नीरथ घोड़ो के साथ प्रकट नहीं हुई और एक भँवर से एलिय्याह को न ले लिया। एलीशा जिद्द से एलिय्याह का पीछा कर रहा था जब कि एलिय्याह उससे लगातार लौट जाने के लिए कह रहा था, लेकिन फिर भी एलीशा ने एलिय्याह का पीछा तब तक किया जब तक कि एक भँवर ने उसे उठा लिया। हम लोग इस संसार के लोगों से और समाज से ड़रते हैं, हमारा ध्यान केवल इतना हैं। इसलिए परमेश्वर चाहता है कि हम केवल आतमिक आशिषों को हासिल करे और यह हमेशा के लिए है न कि थोड़े समय के लिए, पवित्र शास्त्र कहता है "हमारे ही लोग हमारे दुष्मन बनेंगे। जब हम वचन को मानते हैं हम अपने बहुत से प्यारे लोगों को खो देते हैं। लेकिन क्या हम तैयार है? हम संसार को नहीं छोड़ना चाहते हैं, ना कि लोगों को या धर्म को। हमारे परमेश्वर के प्यार को पाने के लिए इस संसार के लोगों के प्यार को खोना होगा। येशु एक और बार परखा गया, जब फरीसियों और सदूकियों ने एक औरत जो व्यभिचार में पकड़ी गई, उसे उसके सामने लाया न्याय करने के लिए। येशु ने एक और चुनौती का सामना किया। वें चिल्लाने लगे, मूसा के समय के कानून के किताब में लिखा है कि ऐसा व्यभिचार किए हुए व्यक्ति पर पथराव कर मार डालना चाहिए। लेकिन येशु के दिव्य बुद्धि के कारण वह जान गया कि उन्होने मूसा के कानून अनुसार बात किया है और उसे परख रहे थे। **रोमियों ५:६-८ – जब हम निर्बल ही थे तब ठीक समय पर मसीह भक्तिहीनों के लिए मरा। दुर्लभ है कि किसी धर्मी मनुष्य के लिए कोई मरे; पर हो सकता है कि किसी भले मनुष्य के लिए कोई मरने का साहस भी कर ले। परन्तु परमेश्वर अपने प्रेम को हमारे प्रति इस प्रकार प्रदर्शित करता है कि जब हम पापी ही थे मसीह हमारे लिए मरा।** येशु ने इस चुनौती का साहस से सामना किया। वह कहता है "मूसा का कानून सही है, लेकिन जिनमे पाप नहीं है वें उस पापी पर पत्थर फैंक सका है। लोग एक–एक करके भागने लगे और जल्दी ही वह औरत येशु के सामने अकेली रह गई। इस प्रकार वह जो पापियों के लिए आया है, औरत से कहता है और पाप न कर।

आज भी, येशु हमे वही सिखाता है, उसकी शिक्षाएँ नहीं बदलती, वह उसके पिता की इच्छा और योजना को पूरा करने आया था। येशु हमे एक और मौका देता हैं हमे अपने जीवनों को आज भी बदलने के लिए। हम देखते हैं पवित्र शास्त्र में **यूहन्ना ८:१-११ – परन्तु येशु जैतून पर्वत पर गया। भोर को वह फिर मंदिर में आया। सब लोग उसके पास आने लगे, और वह बैठकर उन्हें उपदेश देने लगा। तब फरीसी और शास्त्री एक स्त्री को लाए जो व्यभिचार में पकड़ी गई थी और उसे बीच में खड़ा किया। उन्होंने उस से कहा, "गुरू, यह स्त्री व्यभिचार करते हुए पकड़ी गई है। व्यवस्था में तो मूसा ने हमें ऐसी स्त्री को पथराव करने की आज्ञा दी है। तू इस विषय में क्या कहता है? वे उसे परखने के लिए ऐसा कह रहे थे, जिस से कि उस पर दोष लगाने के लिए कोई आधार मिले। परन्तु येशु झुक कर अपनी उंगली से भूमि पर लिखने लगा। परन्तु जब वे बार बार उस से पूछते रहे, तो उसने सीधे खड़े होकर उनसे कहा, "तुम में जो निष्पाप हो, वही सब से पहिले उसे पत्थर मारे।" वह फिर झुक कर उंगली से भूमि पर लिखने लगा। जब उन्होंने यह सुना, तो पहिले वृद्ध तब एक एक करके सब जाने लगे, और वह अकेला रह गया, और स्त्री वहीं बीच में खड़ी रह गई। तब येशु ने सीधे खड़े होकर उस से कहा, "हे स्त्री, वे कहां गए? क्या किसी ने तुझे दण्ड की आज्ञा नहीं दी?" वह बोली, किसी ने भी नहीं, प्रभु। तब येशु ने कहा, "मैं भी तुझे दण्ड की आज्ञा नहीं देता। जा, अब से फिर पाप न करना।"**

स्मरण करो हमारे परमेश्वर ने एक जयवंत जीवन जीया, उसके हर कार्यों में उसने जीत प्राप्त किया। येशु इस संसार में ३३ वर्ष जीया। जैसे कि पवित्र शास्त्र कहता है कि वह इस संसार में उसके पिता की इच्छाओं को पूरा करने आया और वह हमारे लिए मरा और तीसरे दिन जी उठा ताकि हमे वह एक सहनशील जीवन दे सके। जैसे कि परमेश्वर ने इस्राएलियों से कहा कि वें मिद्यानीयों और अरामीयों से लड़े। करीब २६००० इस्राएली आए आगे उनसे लड़ने के लिए, लेकिन परमेश्वर ने पूरी भीड़ को साफ़ किया और अंत में केवल ३०० लोगों को शत्रुओं ने लड़ने के लिए चुना। हाँ, परमेश्वर ने बहुतों को बुलाया लेकिन कम लोगों को चुना है। अगर हमारा जीवन वचन के अनुसार नहीं जीया जा रहा है तो हमारा जीवन व्यर्थ है। **२ कुरिन्थियों २:१४ – परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो जो मसीह के द्वारा विजयोत्सव के जुलूस में हमारी अगुवाई करता है, और हमारे द्वारा अपने ज्ञान की मधुर सुगन्ध हर जगह फैलाता है।** याद रखें, परमेश्वर चाहता है कि हम एक जयवंत जीवन जीए। वह चाहता है कि हर चीज़ हम इस दुनिया में करते हैं उसमें हम जीत हासिल करे। माँगो तो तुम पाओगे, हाँ, जब हम एक आतमिक जयवंत जीवन जीए, जो भी हम येशु से माँगे वह हम पाएंगे। हमे परमेश्वर से शुद्ध और स्वच्छ हृदय से माँगना चाहिए, हमारी माँग परमेश्वर के लिए एक सुगंध और खुशबू होना चाहिए और न की एक गंदा, तुच्छ और पाप–भरा हृदय। जब भी अब्रहाम परमेश्वर के पास गया, वह पहला बलि चढ़ाता था और परमेश्वर से उसके पापों के माफ़ी के लिए माँगता था और फिर प्रार्थना करता था।

सुलैमान ने मंदिर को परमेश्वर को अर्पण करने से पहले, वह परमेश्वर से प्रार्थना करता था और आग स्वर्ग से नीचे उतरकर होमबलि और बलिदानों को ले लेती थी। लेकिन आज, हमे परमेश्वर का कोई भी बलिदान देने कि ज़रूरत नहीं हैं। हमे उसके लिए कोई भी बलिदान देने की आज ज़रूरत नहीं। परमेश्वर ने हमारे जीवन को आज बहुत आसान बना दिया है। हमे उसके लिए आज कोई बलिदान देने कि ज़रूरत नहीं।

येशु ने फिर एक बार चुनौती का सामना किया, हम पढ़ते हैं **मत्ती २२:१६-२१ में – अतः उन्होंने अपने चेलों को हरोदियों के साथ उसके पास यह कहने को भेजा : हे गुरू, हम जानते है कि तू सच्चा है और परमेश्वर का मार्ग सच्चाई से सिखाता है, और किसी के प्रभाव में नहीं आता; क्योंकि तू किसी का पक्षपात नहीं करता। इसलिए हमें बता कि तू क्या सोचता हैः कैसर को कर चुकाना उचित है या नहीं?" येशु ने उनकी कुटिलता जानकर कहा, हे कपटियो, तुम मुझे क्यों परख रहे हो? मुझे वह सिक्का दिखाओ जिस से कर चुकाया जाता है।" और वे उसके पास एक दिनार ले आए। उसने उनसे कहा, "यह आकृति और लेख किसके हैं?" उन्होंने उस से कहा, "कैसर के।" तब उसने उनसे कहा, "जो कैसर का है वह कैसर को दो, और जो परमेश्वर का है वह परमेश्वर को दो।"** येशु ने लोगों की दुष्टता को जाना जब उन्होने उससे पूछा कि हम कैसर को कर दे कि नहीं? इसलिए येशु ने उत्तर दिया "जो कैसर का है वह कैसर को दो और परमेश्वर का है जो है परमेश्वर को दो। इसलिए यह ज़रूरी है कि हमेशा परमेश्वर पर ध्यान लगा रहे। **मत्ती १३:५८ – अतः तुम सिद्ध बनो, जैसा कि तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है।** हमारा परमेश्वर हर वस्तु में परिपूर्ण है, इसलिए हमे भी परिपूर्ण बनना चाहिए। याद करें कि भीड़ ने जब परमेश्वर के लोगों को देखा तो क्या कहा – आ गए यँहा वे लोग जो संसार को उलट–पलट कर ड़ालते हैं।" कोई भी बुराई उनके सामने नहीं रूक सकती थी, यह लोग उनके हर कार्य में धर्मी थे। येशु कहता है, जैसे मैं हर वस्तु में परिपूर्ण हूँ , तुम भी हर कार्य में परिपूर्ण हो जाओ। कई बार हम प्रश्न करते हैं– क्यों इतने सारे लोग परमेश्वर को छोड़कर फिर गए? परमेश्वर के कई बच्चों को जीवन के चुनौतियों का सामना करने क्यो नहीं हुआ? क्यों बहुत–से हार जाते हैं? पवित्र–शास्त्र इस प्रश्न का उत्तर देता है, **मत्ती १३:५८ – और लोगों के अविश्वास के कारण उसने वहां सामर्थ के अधिक कार्य नहीं किए।** उनके अविश्वास के कारण बहुतों ने परमेश्वर को छोड़ा। याद रखें – हमारा परमेश्वर सामर्थी है, हमारा परमेश्वर बलवान है, हमारा परमेश्वर परिपूर्ण है। वह किसी का नाष नहीं करेगा वह अपने बच्चों को तकलीफ़ के समय नहीं छोड़ेगा, खास कर, हमारे परखने के समय में। जो कोई उसका पीछा करते हैं बिना किसी हिचकिचाहट के परमेश्वर का पीछा करते हैं वे अनंतकाल तक उसके साथ जाएंगे। **२ तीमुथियुस १:१२ – और इसी कारण मैं ये सब दुख भी उठाता हूं, फिर भी मैं लज्जित नहीं, क्योंकि मैं जानता हूं कि मैंने किस पर विश्वास किया है, और मुझे पूर्ण निश्चय है कि वह मेरी धरोहर की रखवाली**

करने में उस दिन तक समर्थ है। प्रेरित पौलुस कहता है मैं लज्जित नहीं हूँ कि मैंने जिस के लिए तकलीफ़ उठाई। मैं विश्वास करता हूँ कि वह मुझे आज छुड़ा सकेगा। जिस किसी ने परमेश्वर पर विश्वास किया और उसपर ध्यान लगाया, वें हमेशा सफ़ल हुए हैं। जिस किसी ने परमेश्वर के कारण तकलीफ़ सही वें उसके कारण सर ऊँचा उठाकर गौरव से उसके लिए जिए हैं। पवित्र–शास्त्र में हम देखते हैं कि एलीशा ने एलिय्याह का पीछा किया और एलिय्याह से आशिषों का दुगना भाग पाया। गेहजी ने एलीशा का पीछा किया लेकिन उसके लोभ के कारण क्या हुआ – नामान का कुष्टरोग उस पर आया। पवित्र–शास्त्र उन लोगों के नामों का भी लेखा रखता है जो अपने आतमिक युद्धों में हार गए। हम गेहजी के सजा को पवित्र–शास्त्र में पढ़ सकते हैं, लेकिन हम नहीं जानते कि हमारा अंत क्या होगा.....क्या हम आतमिक रीति से सफ़ल हैं या नहीं केवल जब हम हमारे न्याय के लिए खड़े होते हैं, हम जानते हैं कि हम हमारे परमेश्वर के साथ कहाँ खड़े हैं।

हमारा परमेश्वर नहीं चाहता है कि हम नरक की आग में अंत पाए जहाँ कीड़े नहीं मरते और जहाँ दाँत पीसे जाते हैं। पवित्र–शास्त्रो ंने नबी एलीशा के बारे में कहा है, उसमें सच्चा प्यार परमेश्वर के लिए था इस लिए उसकी आतमिक आशिषें एलिय्याह से दुगना भाग में था। लेकिन अगर हम शारिरिक रीति से उन्नति पाना चाहते हैं हमारे जीवनों में गेहजी की तरह, हमारा जीवन व्यर्थ और किसी लाभ का न रहेगा। इसलिए हमे ऐसी इच्छाओं को हमारे जीवन में से निकालना हैं और केवल उनका पीछा करना हैं जो हमारे लिए आतमिक आशीष ले आएगा। हमे किसी भी वस्तु को परमेश्वर और हमारे बीच आने नहीं देना चाहिए। अगर हम चाहते हैं कि परमेश्वर हमारे पापों को दूर करें और अपने आँसुओं को पोंछे तो हमे पाप की वस्तुओं को हमारे जीवनों से दूर रखना चाहिए। हमारे पाप परमेश्वर और हमारे बीच में परदा बन जाएगा और इस कारण परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं को नहीं सुन पाएगा। परमेश्वर हम में से हर एक को फलदायक जीवन देना चाहता है। अदन के वाटिका में भी जब आदाम और हव्वा ने पाप किया, परमेश्वर ने उन्हें वाटिका से नग्न नहीं भेजा लेकिन पत्तों के कपड़े बनाएं और उनको पहनाकर बाहर भेजा। इसी प्रकार आज भी, वह हमे अपने प्यार और अनुग्रह से आशीष देता है, हमे उसका फ़ायदा नहीं उठाना चाहिए। जैसे हनन्याह और सफीरा ने नबी के सामने झूठ बोला की उन्होने ज़मीन को बेच दी, इस लिए परमेश्वर की शिक्षा उनपर तुरंत आयी। दोनों, पती और पत्नी मर गए और जिन लोगों ने यह देखा, उनपर भय आ गया। उन्होने प्रभु को स्वीकार किया और प्रभु का भय उनपर आया, वें एकता में एक–दूसरे के साथ रहने लगे और परमेश्वर के प्यार में थे। आज, हमारा परमेश्वर हमारी ओर दयालु और प्यारा है। हमे हमारे जीवनों को सुधारकर अच्छे के लिए बदलना हैं।

– पास्टर सरोजा म.